कोलकाता के विश्वात्मा मंदिर में दुर्गा पूजा के उद्घाटन के अवसर पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का अभिभाषण

दिनांक 16 अक्टूबर 2023, सोमवार	समय : 12.15 PM	स्थान : न्यू बैरकपुर, कोलकाता

- विश्वमाता मंदिर और विश्व सेवाश्रम संघ के संस्थापक अध्यक्ष परम पूज्य गुरु जी श्री समीरेश्वर ब्रह्मचारी जी महाराज,
- असम की प्रथम महिला श्रीमती अनिता कटारिया जी,
- विश्व सेवाश्रम संघ के उपाध्यक्ष
- डॉ. धनपत राम अग्रवाल जी,
- प्रो. एन. ए. भास्कर जी,
- श्री सौमिक राहा जी,
- आमंत्रित अतिथिगण एवं
- उपस्थित देवियों और सज्जनों !

नमस्कार!

स□से पहले, मैं आप सभी को दुर्गा पूजा की □हृत-□हृत □धाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

मैं इस विश्वमाता मंदिर और विश्व सेवाश्रम संघ की पवित्र भूमि पर उपस्थित होकर □हृत प्रसन्नता हो रही है। मुझे याद है कि फरवरी महीने में ज□ मैंने राज्यपाल का भार संभाला, त□ आदरणीय श्री अमितानंद ब्रह्मचारी जी महाराज ने मुझे टेलीफोन पर □धाई दी थी और मुझे यहाँ आने के लिए आमंत्रित भी किया था।

उसके □ाद फिर 16 मार्च को, गुवाहाटी में मां कामाख्या मंदिर के दर्शन के दौरान सौभाग्य से मेरी मुलाकात पूज्य गुरुजी श्री समीरेश्वर ब्रह्मचारी जी से हुई। उस समय श्री अमितानंद ब्रह्मचारी महाराज ने मुझे पुन: इस पवित्र विश्वमाता मंदिर और विश्व सेवाश्रम संघ के दर्शन के लिए आमंत्रित किया।

आखिरकार मां दुर्गा की कृपा और आशीर्वाद से आज मुझे विश्वमाता मंदिर में आयोजित इस दुर्गा पूजा महोत्सव में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और आप सभी के □ीच आज उपस्थित होकर मैं स्वयं को धन्य समझता हूँ। इसके लिए गुरुजी के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

देवियों और सज्जनों,

दुर्गा पूजा को दुर्गोत्सव या शरदोत्सव के नाम से भी जाना जाता है। यह एक पवित्र त्योहार है। यह त्योहार पूरे भारतवर्ष में मनाया जाता है। यह हिंदुओं का एक प्रमुख त्योहार है। विशेष रूप से इस पवित्र त्योहार को पश्चिम □ंगाल सहित असम, त्रिपुरा, ओडिशा, □□हार, झारखंड और कुछ अन्य देश जैसे □ांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका में □ड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

यह त्योहार ुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। यह त्योहार पश्चिम ंगाल में ड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है। यहां की दुर्गा पूजा भव्य और दर्शनीय होती है। यही वजह है कि यूनेस्को ने कोलकाता की दुर्गा पूजा को सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया है। इससे केवल पश्चिम ंगाल का ही नहीं, ल्कि पूरे देश का मान और सम्मान ढ़ा है।

हमारे ीच विराजमान गुरुजी श्री समीरेश्वर ब्रह्मचारी जी महाराज इस सेवाश्रम संघ के संस्थापक हैं। आपका पुरुषार्थ स्तुत्य है। धर्म, संस्कृति, कला और अध्यात्म के क्षेत्र में गुरुजी का योगदान अभूतपूर्व रहा है।

मुझे यह ताया गया है कि गुरुजी ने माँ दुर्गा की प्रतिमा स्वयं अपनी हाथों से नाई है। मां दुर्गा की इतनी सुन्दर प्रतिमा के दर्शन से मैं अभिभूत हूँ। संक्षेप में कहा जाए तो गुरुजी हुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। गुरुजी न केवल एक आध्यात्मिक पुरुष हैं, ल्कि एक अच्छे मूर्तिकार भी हैं। साथ ही वे एक लेखक, कवि, कलाकार, गायक, चित्रकार, गीतकार, संगीतकार सहित सरोद आदि अनेक वाद्ययंत्रों के अच्छे वादक भी हैं। उनकी आधुनिक सोच और विचारों से हजारों लोगों को प्रेरणा मिलती है।

विश्व सेवाश्रम संघ की दुर्गा पूजा को आपने एक अलग पहचान दी है। यह दुर्गा पूजा कोई सामान्य दुर्गा पूजा नहीं है, यह एक सार्वभौम दुर्गा पूजा है।

मुझे □ताया गया है कि गुरु जी के सत्प्रयासों से विश्व के अनेक देशों की मिट्टी और जल से मां दुर्गा की प्रतिमा का निर्माण हुआ है। गुरुजी ने इस पूजा को सार्वभौमिक □नाने के लिए दुनिया के हर क्षेत्र को जोड़ा। इस पुण्य कार्य हेतु गुरु जी को मैं एक □ार पुन: हृदय से नमन और वंदन करता हूँ।

गुरुजी ने विश्व कल्याण के निमित्त विश्व सेवाश्रम संघ की स्थापना की है। यह संघ एक सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संगठन है, जो शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के जरिए समाज को आगे □ढ़ाने का काम कर रहा है। इसके अलावा जरूरतमंद लोगों की सहायता भी कर रहा है।

देवी दुर्गा शक्ति की प्रतीक हैं और नारी-शक्ति का दिव्य रूप भी हैं। दुर्गा पूजा □ुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व है। माँ दुर्गा के नौ अलग-अलग रूप जीवन और प्रकृति के जुड़ाव के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आइए, इस पावन अवसर पर, हम एक ऐसे समाज के निर्माण का संकल्प लें, जहां महिलाओं को पहले से अधिक सम्मान मिले एवं राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में उनकी □रा□र की भागीदारी सुनिश्चित हो।

मैं दुर्गा पूजा के इस शुभ अवसर पर, "मां भगवती" से प्रार्थना करता हूँ कि यह खुशी का त्योहार हम स□के जीवन में सुख, सौभाग्य और समृद्धि लेकर आए और देशवासियों के □ीच शांति, □ंधुत्व व एकता की भावना और अधिक सुदृढ़ हो।

धन्यवाद !

जय हिंद !